श्री कामेश्वर सिंह 'सहायक प्रोफेसर'
राजनीति विभाग, रोहतास महिला कॉलेज सासाराम।
वर्ग – बी० ए० पार्ट – I 'प्रतिष्ठा'
पत्र – प्रथम, यूनिट न० – 12
राजनीतिक सिद्धान्त – डॉ० पुखराज जैन
दिनांक – 23 – 07 – 2020

सम्प्रभुता सम्बन्धी सिद्धान्त पर बहुलवादियों के आक्षेप का शेष भाग....

③ कानूनी दृष्टिकोण के आधार पर :– बहुलवादियों का तीसरा प्रहार कानून की दृष्टि से किया है। सम्प्रभुता के एकलवादी सिद्धान्त के अनुसार राज्य ही कानून का स्रोत है, राज्य की सहमति से ही कोई कानून वैध हो सकता है। राज्य द्वारा निर्मित कानून सर्वोपरि है। लेकिन बहुलवादियों का कहना है कि राज्य न तो कानून का स्रोत है और न उसकी शक्ति के चलते लोग कानून का पालन करते हैं।

ड्यूगी के अनुसार समाज को सुदृढ़ रखने की आवश्यकताओं द्वारा ही कानून का निर्माण होता है। व्यक्ति कानून का पालन इसलिए करते हैं कि कानूनों का पालन नहीं करने से उनका सामाजिक जीवन नष्ट हो जायेगा। सामाजिक सुरक्षा ही कानून की अनुमति है। इस प्रकार वे लोग कानून द्वारा न केवल राज्य के अंगों पर वरन् स्वयं राज्य पर बंधन लगा देते हैं। अतः कानून के माध्यम से वे राज्य की सर्वोच्च और निरंकुश सत्ता का खण्डन करते हैं।

④ व्यक्ति के विकास के आधार पर :– प्रभुसत्ता का विचार व्यक्ति के विकास में बाधक है क्योंकि यह राज्य को परमसाध्य और व्यक्ति को साधन मात्र बना दिया है जो वास्तविक स्थिति के बिल्कुल विपरीत है।

व्यक्ति को अपने विवेक के अनुसार अपनी भक्ति निर्धारित करने का अधिकार होना चाहिए। जो केवल बहुलवादी व्यवस्था में ही सम्भव है। लॉस्की के शब्दों में — "मैं केवल उसी राज्य के प्रति राजभक्ति और निष्ठा रखता हूँ उसी के आदेशों का पालन करता हूँ, जिस राज्य में मेरा नैतिक विकास पूर्ण रूप से होता है।"

(5) लोकतंत्र के आधार पर :— वर्तमान समय में लोकतंत्र में शासन पर जनता का कोई नियंत्रण नहीं है वास्तविक शासन नौकरशाही द्वारा किया जाता है जो व्यक्ति के विकास में बाधक है, क्या लोकतंत्र का उपहास है। सच्चा लोकतंत्र तो व्यक्ति के विकास में सहायक होता है। इनके अनुसार शासन के सभी कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लेना है। जो केवल बहुलवादी व्यवस्था में ही सम्भव है।

(6) अन्तर्राष्ट्रीयता के आधार पर :— कुछ लेखकों का विचार है कि अन्तर्राष्ट्रीय कानून के विकास के परिणाम-स्वरूप बाहरी मामलों में राज्य की सम्प्रभुता नष्ट हो जाती है। इनके अलावा बहुलवादी यह भी कहते हैं कि सम्प्रभुता के सिद्धान्त ही संघर्षों एवं युद्धों का जनक है और विश्व-शान्ति बनाये रखने के लिए सम्प्रभुता के सिद्धान्त का त्याग एक अनिवार्य आवश्यकता है। लॉस्की के शब्दों में — "असीमित एवं अनुत्तरदायी सम्प्रभुता का सिद्धान्त मानवता के हितों से मेल नहीं खाता और जिस प्रकार राजाओं के दैवी अधिकार समाप्त हो गये वैसे ही राज्य की सम्प्रभुता भी समाप्त हो जायेगी। यदि सम्प्रभुता का सारा विचार ही सदैव के लिए समाप्त कर दिया जाए तो राजनीति विज्ञान के प्रति यह एक बहुत बड़ी सेवा होगी।" The End.

Scanned with CamScanner